

त्याग मान श्री ॥ खग ॥ मा ॥ रु का ग न दि य क न ध ल ड ग न द न
 नि ड नु व डा ड न लः श्री गी नि ग न ढ ख न द न वि य नी ल्य सा ड न
 ॥ मु दि त ल ढ व ता न ता ल द ड मा हा र न व म द ग सा ड न
 स व हि सं ग म ॥ अ ग ॥ अ नु य म ल ग डा ड न ल ॥ २ ॥ त के न ध
 नि र नि अ सु न मा ह न द ड म सं गी त स द न अ स क न ड न व
 न क ल द का ण क अ नु य मा न ल न ॥ ३ ॥ त क न ल वि न क या न
 य न लि म ध न स व वि वि त ड र ड ल ॥ अ के ल स वि का स
 द ल दि स द न ध वा ध न ल ॥ ४ ॥ वि का वि ड के न वि ल व हि द्य
 न का ठि की दी अ सु न डि ड न ल न त स न ॥ ५ ॥ सा वि श्री ल व सा न

देवार्नेयममंगुत्रं। सर्वं भाग्यं यत्र कारं। रागवपुमामाहं। नीर्वाजननिर्हं दवत्त
 विपुलं महानगा। कायथागरं संहर्तं। वन्दरुक्कगनिग्यनं। सिहिकागरं संहर्तं स
 वेदवहयकर्तं। अर्थकार्यमहापीर्यं। वादुनिर्हं नमामाहं। यात्रासधं मदसं कोर्तं।
 तात्रागुहसमन्वितां। मोक्षोत्रोत्तमकंधारं। नं कर्तं यत्तमामाहं। सुगुहा नूहसं कोर्तं।
 सर्वदवेन मरुतं॥ सर्वार्थं सर्वदेवानां। जन्मदवानमामाहं। दूतिस्मार्तवाप्तनाकं।
 अयतिष्ठातेमानवा। दिवावाजदि० वावागोसमप्रविष्टं मेव॥ अरिधेगार्थसिद्धं
 नवगुहयसंनिर्तं। सुधीराद्यसदाकालं। पीठदहं यथाहति॥ काचनवायामनसं
 दियानिक्कामना। वकुलतिष्ठता वी। कवामिययसकलं यत्तमेनवगुहयसिद्धं
 ययामि॥ ॥ इति नवगुहसंनिर्तं समाप्तं॥ ॥

पति ३

कुंतमा। रागवतवा सुदवाय॥ अर्कगडवाय॥ अरुमुगासिभदवययहं पायदूह
 री। यसादं वृद्धिभनधं कथं उस्मसिमाधव॥ ॥ ॥ रागवानकवा॥ किंकनामसहस्र
 ॥ विज्ञायते। यार्थिवा। नानिनामानि वदन्तु। अमु यो यः ४ यमयन॥ २॥ यथमनुहः
 त्रिविधा। दिगीर्थं कर्तव्यं तथा। हनीयं पद्मना। उच्यते। उर्थं वातनं संहर्तं॥ ३॥ यथमनुहः
 दगर्तं व। पद्मनुमधसुदनी। हयमं वासुदवंहि। वावाहनामवाधकी॥ ४॥ नवमं य
 न्दत्री कर्तव्यं दगर्तं वजनादनी। कषुमकादनी नाम। दादनीं धीधर्वं तथा॥ ५॥ नानिद्राद
 गनामानि विष्णुया। कानि सर्वं सगर्तं यानय॥ ०॥ अमु यन्वायन्वहर्तं यन॥ ॥ वावाहनाम
 सहस्रं कनादानसतस्य व। अयमधसहस्रं य। राजसूयसहस्रं य। ॥ ॥ गममास

विष्णु ३

[illegible]

१॥ अत्र तान न्य (गवि न्य नाम वा न न ले खडा न स्य क सक ना वा ग स स्यं स स्य व दा म्य हं ॥

॥ आदित्यदापतिवास्तु दधुपादिमहेश्वरः ४५ वनानासुमनिर्यथाधिपत्यु विवक्तिः ॥

३३

ॐ नमो गुरुवे नमः ॥ सुदानन्द उवाच ॥ नामाद्या नंदनायमा ॥ यीत्तति स्व
लदेष्टुं ॥ पापानि याति विलदं पत्तं सुवर्गि वा द्रव्यं ॥ ॥ साकथं दुवर्गी लोके ॥ पूजिता व
न्दिता नहि दर्शनायियत्तुं ॥ हस्तं काठिगदा ददत्त ॥ शास्त्राभ्यासमानवालाका यस्मिन्
किमोर्वयः ॥ सा लग्नमगितायाथ उलगीयत्तुं ॥ ॥ उलगीय विविचिन्ति धर्मो गत्वा
वर्षं लवो ॥ कर्मवार्थं कलोथ व ॥ वाययन्ती हरु गले ॥ ॥ किं कविषाति संपूज्य मनोर्वि
वविस्तु वेश उलगी दलन ददत्त ॥ पूजिता यन देष्टुं ॥ ॥ गीर्थजागुदिगमने ॥ किं तस्य कि
मिवावपश्यं च यन्ति ह व मूर्ति ॥ उलगी दत्त कामलेशा ॥ ॥ समञ्जलि दले र्युक्तं ॥ कर्म वाय
हमलुला कूर्चं नु पूजनं यय ॥ गयानि यवमंगि ॥ ॥ मानदान गयान् ॥ यामनक

३६ गवाचने उलगी कीर्तना कसि यन्मिथादविका हली ॥ ८ ॥ उलगी मरुत वल्लभं यहा ववि
 ३५ पूवत्तरी कगवाय विविदिन्दित्वा लभति गुरुसाहसकी ॥ ९ ॥ खदग समुद्र निर्यं पूजयामिः
 ३० यथा हविः कथक रूप विगुंग कलो मल विना सती ॥ १० ॥ मरुत ननयः कथं तग हित्वा
 ४९ उलगी दली पूजनं वासुदवाय लक्ष्मीकादि गुलं लरुता ॥ ११ ॥ यगु वाज हन निर्लं प्रियं प्रिय
 ४२ तने गुली मून वः सिद्धि गन्धर्वाः याता लय न्न गन्धवा ॥ १२ ॥ या सुवनि सर्व दत्ता धकिन वास
 ४२ वसुक्त माः कृष्ण गन्धर्वाः दसीरुता समुद्र मथनं यवा ॥ १३ ॥ लव मरुता गडलगी विष्टता
 ४३ विष्णुना स्वयं गम कूल स्य व वृक्षार्थं कस्य निधानाय व ॥ १४ ॥ वापिता गमनी ० वस्वयं
 ४४ कथं नया लिता जगदिश्वान उलगी लभति नीव निह तव ॥ १५ ॥ वसिष्ठ वचनात्पूर्व त

४५ क२ मराग वयु तटा दग पी व वक्षार्थं यवापिता उलगी ववा ॥ १६ ॥ विद्या गवाम दव स्य वय
 ४७ किजन कात्मजा श्रुतां वनिक मक्ष वापिता उरु सं गता ॥ १७ ॥ गद्वार्थं मसा दवी पूजावे
 ४८ वहि मायले वापिता मरुत रक्ता उलगी पुन मा मय हं ॥ १८ ॥ पुया गवसि ता निर्यं का वः
 ४९ लमाध वस्य वा वापिता लं प्रिया दयो गं गज लमी य गता ॥ १९ ॥ वृक्ष कूल समीडे ये सा वि
 ५० या वाय ना कता यक्ष नय न भेदार्थं उलगी ली न मा मय हं ॥ २० ॥ सर्वा हि देव यत्नी हि क न
 ५१ वीरिन्ध वापिता स्वयं उमंगला र्थं ये से विता लं न भा मुक्त ॥ २१ ॥ धर्मा वल्लभ यायी वे वापि
 ५२ तापि रु हि ४ स्वयी से विता उलगी पूषा स्वामि ना हि न मिदुता ॥ २२ ॥ वापिता वाम द व न सि
 ५३ विता ल ललान वागी न या या लिता रक्ता उलगी दलु का वन ॥ २३ ॥ लेला क्य वापिनी गं गः

उद्दालनीददातिवाकृन्तंगुनागच्छ, यंविद्याप्रयच्छति॥३२॥उल्लङ्घनीनाममातुलाः
उद्दालनीवनिदेलहामसुवानाच्छदवनिमकियच्छनिदहिनी॥३३॥उल्लङ्घनीस्तवसंउद्दाल
सुखसुखददातिवामदर्शनद्वययायायंविष्णुनाहवतक्ष्मणा॥३४॥गृह्यस्मिन्मुनिनि
ल्लिखितंवापिकसुवानागुरुविद्यतस्यमंगलंवर्द्धयद्गृह॥३५॥सर्वगुर्मंगलमस्यः
नास्तिकिंविदमंगलंनिधयकगवर्ककिर्नविद्यागस्यवेष्वर्वा॥३६॥जीवन्मयाधिविनिर्म
कंधर्मश्चवर्द्धनमनिशउल्लङ्घनीस्तवदुष्टाणिहृल्लवतिमानवा॥३७॥गीर्थकैरिहसहसंति
यत्तुल्लङ्घनीहृल्लं।तत्तुल्लंसंवाप्राति,यतिर्लाङ्घनीस्तव॥३८॥ ॥००॥निशान्तिस्तु
पूजातउल्लङ्घनीस्तवसंमाकशा॥ ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ गता परिं यद्वत् विप्रनाजं विनायकं । दवी पूर्णं महादेव । म
 हावत्स यवा कर्म ॥ महादत्र महाकाय भक्तदंष्ट्रं गजाननं ॥ ध्वजवर्णं महादीपं । त्रिभ
 र्णं गतनायकं ॥ अरुमालां मदनं च । दक्षिण विक्षत्रिणं । पूर्णमादकपातुं च । वामः
 हस्त विक्षत्रिणं ॥ नानापूषा वरुणं दवं । नानागन्धनस्य परं । नागयक्षा यक्षी गीर्वाणाः
 विष्णुविनागनं ॥ दवास्तन मनूष्ये । सिद्धिगन्धर्ववन्दिनी । ऐलाक विष्णुहर्ता । मास्वा
 वूरुन भाम्यहं ॥ ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥

१ कत्त ग च ड व दू र्ज म ॥ ८० ७२ नत थ द धन य रु व ह म य त ल व स ब ॥ ८१

त्वत्ति श्री

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय
 AGRA TROPHIES

2133

१२५२३ मन्त्रवधामं २७ धामं ३ मूलकामं ४ न्यसि हंसं ५ कालवासा ॥ मंद साधन विधि
विष्णु उपायानि ते ज्ञेयं तौ नमः सदा कृताया विनम्र

१ श्री नमो नाथाय नमः ॥ नाग शृङ्ग कल्याण ॥ वा ॥ द विर वा नि
 त्रिभुवनानि ॥ श्री ॥ त्रि मायि ॥ ॥ रु नि ॥ रु व न र्द यि त्य नि सृजि ति
 ॥ का ठि ॥ अ न न क वि ग म वि ना श ॥ ॥ न क वि ज व न वि ल वि द वि नि
 ग म डा त था ग न ॥ प नु ना श ॥ ॥ ना ग श्री ॥ वा ॥ श्री गं ग ध व न मा न भा
 न ज य गं ग ध व न मा न भा ॥ ॥ गं ग त रं ग ज ठा पु ति सृ रि त च द्रु पि
 ना ठ र स र ॥ ॥ रु ग त क थ ना ॥ ॥ रु ग र्थ र्थ त त र्थ र्थ त क थ
 र्थ गं ग के त क र्थ ॥ ॥ श्री नी न य ॥ न त्रि य ना वि म द न द ह द म र त्रि ॥

न ध न वा स ध य ॥ ॥ वा स कि ह नि य ति ॥ अ कृ न ग न ॥ अ ग र्ण
 ग स व ह रु क य ॥ ॥ रु य य न म ध व न ॥ स क न र्ग त्रि कृ व न य ति य र
 वा य ह न ॥ ॥ या ग न प नु क ह आ दि य वि वि य ति ॥ आ दि दि ग म न द
 र व त न ॥ ॥ श्री म कृ नु न श्री नि वा स म दि य ति ॥ वा दि च न न ग ह य न

म पू

॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दयादायी
 वाङ्मनासः

१ श्री गणेशाय नमः ॥
 १ अथ वि ॥ ११
 १ अथि न ह य ॥
 १ क सि य ॥
 १ सा व न क ॥
 १ सा धा न य ॥
 १ सा इ इ क ॥
 १ न आ द वा व ता ॥
 १ स क म्मा न ॥
 १ ग व र्वा न ॥
 १ ग न य म स ॥
 १ रु ग ॥
 १ रु क रि ति ॥
 १ म न वा ॥
 १ यि य सा न ॥
 १ न को र्ब न ॥
 १ ले डा दा ॥

रसत्रयिः ज्ञमत्रयः यद्य क भवस
 मरागः नति ४ टयाडाः यूवा किद्रा
 किरेयातिसहस्रानकः दीपि
 ह्ययमाननासः ॥ १६ ज्ञेडे कीर्
 विननगर्हर्हृदसादा ॥ ॥ धम
 नुर्गमत्रयः शस्यनकः ॥ वि क
 आयनासः ॥ १६ कात्रयाद नः द
 ससथनः ॥ वि क आयनासः ॥
 १६ कुरु सिदा ॥ यान ॥ वि काडा ॥
 सिलसद्यास्यगय ॥ वि क आयनास
 ॥ मनवः ॥ गुरुलिः ॥ समरागयादा
 डाः ॥ दसमि कुरु ॥ १६ ह्यमिवानः
 धक कृत्तानकः ॥ कायवाडानासः
 ॥ ज्ञेयामार्गयादा ॥ १६ कसनदा १ ॥
 वेदा १ ॥ १६ य १ विर्कः ॥ दिडाः ॥ दस
 वना वडाडा सिद्ध ॥

१६ कृष्णानका ॥ १६ गुलि ॥ मिता हाडाया ॥
 १६ मधकयूल ॥ १६ आद ॥ मलव समलग ॥

१६ १६ वा निसत्रन ॥ १६ रस दा का न अ
 १६ गुरुलि ॥ १६ रस दा का न अ
 १६ दात्रकव ॥ यद्य के ॥ १६ क
 कसनदा ॥ कसन ॥ १६ मिसमराग
 १६ यकय ॥ सर्व ॥ १६ थडावश्या
 यत्रिडा ॥ १६ रसदा ॥

१६ सिखालदा ॥ वसिदा ॥ काकरग
 नदा ॥ १६ रसदा ॥ १६ रसदा ॥
 दान का रस गय ॥ वास्या कलाडा ॥

१६ कि १६ रसदा ॥ १६ रसदा ॥ १६ र
 १६ रिकन डा या डा वय ॥ वास्या
 कलाडा ॥ ॥

१६ रसदा ॥ १६ रसदा ॥ १६ रसदा ॥
 १६ रसदा ॥ १६ रसदा ॥ १६ रसदा ॥
 १६ रसदा ॥ १६ रसदा ॥ १६ रसदा ॥

१६ रसदा ॥ १६ रसदा ॥ १६ रसदा ॥
 १६ रसदा ॥ १६ रसदा ॥ १६ रसदा ॥
 १६ रसदा ॥ १६ रसदा ॥ १६ रसदा ॥